

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 12-08-2025

विषय सूची

- » स्ट्रे डॉग्स पर सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय
- » आर्मेनिया-अज़रबैजान शांति संधि
- » भारत-श्रीलंका समुद्री साझेदारी पर 8वीं उच्च स्तरीय बैठक
- » भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा ऑटोमोबाइल बाजार
- » ऐतिहासिक अध्ययन से डेंगू से बचाव के बारे में नई जानकारी प्राप्त

संक्षिप्त समाचार

- » भारत द्वारा फिजी को 5 टन लोबिया के बीज भेजे
- » पेरिटो मोरेनो ग्लेशियर
- » जम्मू-कश्मीर विधानसभा के लिए नामांकन निर्वाचित सरकार के अधिकार क्षेत्र से बाहर
- » उल्घी फ्रीडमशील्ड
- » एटालिन जलविद्त परियोजना
- » ऑर्बिटिंग कार्बन ऑब्जर्वेटरीज़ (OCO) कार्यक्रम
- » ऊदबिलाव (Otters)
- » पठानीर

स्ट्रे डॉग्स पर सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय

संदर्भ

- हाल ही में, भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने स्थिति को 'गंभीर' बताते हुए दिल्ली सरकार और नोएडा, गुडगांव और गाजियाबाद के अधिकारियों को स्ट्रे डॉग्स को पकड़कर आश्रय स्थलों में स्थानांतरित करने का निर्देश दिया।
 - न्यायालय ने इस बात पर बल दिया कि 'शिशुओं और छोटे बच्चों को किसी भी कीमत पर रेबीज़ का शिकार नहीं होना चाहिए।'

भारत में स्ट्रे डॉग्स की समस्या

- भारत में 60 मिलियन से अधिक स्ट्रे डॉग्स हैं, जो वैश्विक स्ट्रे डॉग्स की जनसंख्या का 37% हिस्सा हैं।
 - यहाँ प्रत्येक 10 सेकंड में एक कुत्ते के काटने की घटना होती है, जिससे वार्षिक आंकड़ा 3 मिलियन से अधिक हो जाता है।
- रेबीज प्रत्येक तीन घंटे में दो जानें लेता है, जिससे भारत रेबीज से संबंधित मृत्युओं का वैश्विक केंद्र बन गया है।
- शिशु और बुजुर्ग विशेष रूप से अधिक संवेदनशील हैं, और दिल्ली, तेलंगाना, पंजाब में घातक हमलों की घटनाएँ सामने आई हैं।
- स्ट्रे डॉग्स स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरे उत्पन्न करते हैं। 2030 तक रेबीज उन्मूलन का लक्ष्य प्रभावी नियंत्रण के बिना असंभव है।

मूल कारण: एक जटिल जाल

- पालतू मालिक:** पालतू कुत्तों की संख्या 2024 में 30 मिलियन तक पहुँच गई है, और यह 10–15% वार्षिक दर से बढ़ रही है।
 - समस्या का एक बड़ा हिस्सा गैर-जिम्मेदार पालतू स्वामित्व से आता है—जैसे पालतू जानवरों को छोड़ना, बिना नसबंदी, और पहचान की कमी।
- प्रॉक्सी पेटिंग की समस्या:** सड़कों पर स्ट्रे डॉग्स को खाना खिलाना—प्रायः सद्भावना से प्रेरित नागरिकों द्वारा—कुत्तों को क्षेत्रीय और आक्रामक बना देता है।

यह शहरी भारत में बंदरों की समस्या जैसा है, जिससे जानवरों का दुस्साहस बढ़ता है और गैर-खिलाने वालों पर हमले बढ़ते हैं।

- नगर निगम कानून:** नसबंदी और आश्रय की अनिवार्यता है, लेकिन क्रियान्वयन कमज़ोर और वित्त पोषण की कमी है।

आवारा आबादी को नियंत्रित करने के पूर्व प्रयास

- घातक उपाय:** इलेक्ट्रोक्यूशन, जहर देना, गोली मारना जैसे पुराने उपाय अमानवीय और अप्रभावी सिद्ध हुए।
 - भोजन के लिए प्रतिस्पर्धा कम होने से बचे हुए कुत्तों में प्रजनन बढ़ गया।
- नसबंदी अभियान:** एनिमल बर्थ कंट्रोल (ABC) कार्यक्रम 1992 में शुरू हुआ और 2001 में औपचारिक रूप से लागू हुआ।
 - इसके अंतर्गत कुत्तों की दो-तिहाई आबादी को कम समय में नसबंद करना आवश्यक है।
 - कोई भी भारतीय शहर निरंतर इस लक्ष्य को पूरा नहीं कर पाया, और पालतू कुत्तों का आवारों से प्रजनन इस प्रगति को नष्ट कर देता है।

कानूनी और नैतिक दुविधाएँ

- खिलाने वालों के लिए संरक्षण:** संविधान के अनुच्छेद 51A(g) के तहत जीवों के प्रति करुणा को प्रोत्साहित किया गया है।
 - भारत के कानूनी ढांचे—जैसे पशु क्रूरता निवारण अधिनियम (PCA) 1960, ABC नियम (2001, 2023 में अपडेट), और नगर निगम अधिनियम—पशु कल्याण और सार्वजनिक सुरक्षा के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करते हैं।
- विरोधाभास:** नगर निगम मृत्युप्राय कुत्तों को छोड़कर अन्य को मृत नहीं कर सकते।
 - अब स्ट्रे डॉग्स को 'सामुदायिक पशु' के रूप में कानूनी मान्यता मिल गई है, जिससे हटाने के प्रयास जटिल हो गए हैं।
- जीवन का अधिकार बनाम सुरक्षा का अधिकार:** सर्वोच्च न्यायालय ने बार-बार कहा है कि स्ट्रे डॉग्स को जीने का अधिकार है, और अंधाधुंध मारने के विरुद्ध चेतावनी दी है। इससे कठिन प्रश्न उठते हैं:

- ▲ क्या आवारा जानवरों का जीवन अधिकार बच्चों और बुजुर्गों के सुरक्षित सार्वजनिक स्थानों के अधिकार से ऊपर है?
- ▲ क्या करुणा के नाम पर जानवरों को सड़कों पर बेघर और बीमार रहने देना नैतिक है?

मानवीय और संतुलित समाधान की ओर

- अनिवार्य पालतू पंजीकरण, माइक्रोचिपिंग और नसबंदी ताकि छोड़ने और अनियंत्रित प्रजनन को रोका जा सके।
- निर्धारित भोजन क्षेत्र और आश्रय ताकि क्षेत्रीय आक्रामकता कम हो।
- जन जागरूकता अभियान ताकि नागरिक कुत्तों के व्यवहार और जिम्मेदार बातचीत को समझें।
- युवाओं में सहानुभूति और जिम्मेदारी की भावना विकसित करना ताकि अधिक मानवीय भविष्य बने।
- पालतू मालिकों और खिलाने वालों की जवाबदेही, जिससे सुरक्षा और कल्याण सुनिश्चित हो।
- राष्ट्रीय टास्क फोर्स का गठन, जो राज्यों के बीच समन्वय करे—जैसा कि सांसद कार्ती चिदंबरम ने प्रस्तावित किया है।

Source: IE

आर्मेनिया-अज़रबैजान शांति संधि

समाचारों में

- अर्मेनिया और अज़रबैजान ने व्हाइट हाउस में एक ऐतिहासिक अमेरिका-प्रायोजित शांति समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिससे नागोर्नो-कराबाख को लेकर दशकों पुराना संघर्ष समाप्त हो गया।

नागोर्नो-कराबाख

- यह अज़रबैजान की अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के अंदर स्थित है।
- यह दक्षिण कॉकस क्षेत्र में पूर्वी यूरोप और पश्चिमी एशिया के बीच स्थित है, जो कॉकस पर्वत के दक्षिणी हिस्से में फैला है और इसमें आधुनिक अर्मेनिया, अज़रबैजान एवं जॉर्जिया शामिल हैं।
- ▲ अर्मेनियाई ईसाई हैं, जबकि अज़ेरी मुस्लिम हैं।



विवाद क्या है?

- नागोर्नो-कराबाख, जो ऐतिहासिक रूप से अर्मेनियाई साम्राज्य का हिस्सा रहा है, ओटोमन, फारसी और रूसी साम्राज्यों द्वारा शासित रहा।
 - ▲ 19वीं सदी में त्सारवादी रूस ने दक्षिण कॉकस पर नियंत्रण किया, लेकिन 1917 की रूसी क्रांति के बाद उसका प्रभाव कम हो गया।
- अर्मेनिया-अज़रबैजान संघर्ष लगभग एक सदी पुराना है, जिसकी शुरुआत प्रथम विश्व युद्ध के दौरान हुई जब ओटोमन और अज़ेरी सेनाओं ने दक्षिण कॉकस में जातीय अर्मेनियाई लोगों को निशाना बनाया।
- नागोर्नो-कराबाख, जो अज़रबैजान के अंदर एक प्रमुख अर्मेनियाई क्षेत्र है, जातीय, धार्मिक और भू-राजनीतिक तनावों का केंद्र बन गया।
- 1991 में सोवियत संघ के विघटन के पश्चात, नागोर्नो-कराबाख के अर्मेनियाई लोगों ने स्वतंत्रता की घोषणा की, जिससे 1994 तक युद्ध चला और लगभग 30,000 लोगों की मृत्यु हुई।
 - ▲ इसके पश्चात रूस की मध्यस्थता में युद्धविराम हुआ, लेकिन अंतरराष्ट्रीय शांति प्रयासों के बावजूद सीमाएं अनसुलझी रहीं।
- 2020 में अज़रबैजान ने एक सफल सैन्य अभियान चलाया और तुर्की और पाकिस्तान के समर्थन से आसपास के क्षेत्रों पर पुनः नियंत्रण कर लिया।
 - ▲ 2023 में एक और अभियान के पश्चात अज़रबैजान ने पूर्ण नियंत्रण हासिल कर लिया।

हालिया समझौते के प्रमुख परिणाम

- **शत्रुता का अंत:** यह शांति समझौता लगभग 35 वर्षों की तनावपूर्ण स्थिति को समाप्त करता है और क्षेत्रीय स्थिरता एवं विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।

- **अंतराष्ट्रीय शांति और समृद्धि के लिए ट्रंप मार्ग (TRIPP):** इसमें अज्ञरबैजान को अर्मेनिया के माध्यम से उसके नखचिवान एक्सकलेव से जोड़ने के लिए प्रमुख परिवहन मार्गों को फिर से खोलना और “अंतराष्ट्रीय शांति और समृद्धि के लिए ट्रंप मार्ग” बनाना शामिल है।
- **अमेरिका के विशेष विकास अधिकार:** अमेरिका सैनिक नहीं भेजेगा, लेकिन उसे इस मार्ग को विकसित और प्रबंधित करने का विशेष अधिकार मिलेगा, जिसमें संभवतः अमेरिकी कंपनियां शामिल होंगी।

भारत के सामरिक हित

- **अर्मेनिया के साथ संबंध:** भारत और अर्मेनिया के बीच हजारों वर्षों पुराने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध हैं।
 - ▲ दोनों देशों के बीच आधुनिक समय में सुदृढ़ संबंध हैं, जिसमें 2022 में हुआ \$250 मिलियन का रक्षा समझौता शामिल है।
 - ▲ अर्मेनिया कश्मीर और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद पर भारत के दृष्टिकोण का समर्थन करता है।
- **कनेक्टिविटी में रुचि:** रणनीतिक रूप से दक्षिण कॉकस क्षेत्र, जिसमें अर्मेनिया और अज्ञरबैजान शामिल हैं, भारत के रूस और यूरोप के साथ संपर्क लक्ष्यों के लिए महत्वपूर्ण है, जिसे भारत चाबहार बंदरगाह के माध्यम से अंतराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे (INSTC) के जरिए सुदृढ़ करना चाहता है।

Source :LM

भारत-श्रीलंका समुद्री साझेदारी पर 8वीं उच्च स्तरीय बैठक

संदर्भ

- भारतीय तटरक्षक बल (ICG) और श्रीलंका तटरक्षक बल (SLCG) के बीच आठवीं उच्च स्तरीय बैठक (HLM) नई दिल्ली में आयोजित की गई।

परिचय

- चर्चाएं समुद्री प्रदूषण प्रतिक्रिया, समुद्री खोज एवं बचाव, और समुद्री कानून प्रवर्तन के क्षेत्रों में सहयोग

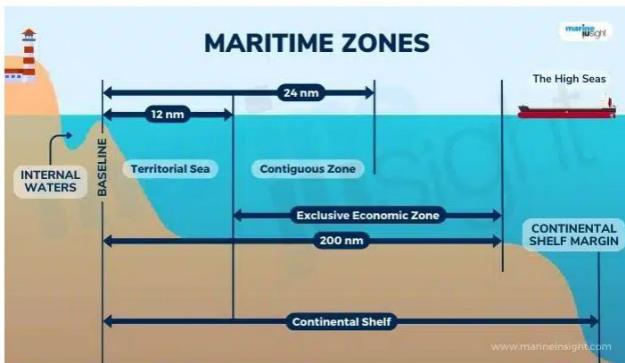
- को सुदृढ़ करने पर केंद्रित थीं, साथ ही क्षमता निर्माण तथा तकनीकी सहायता पहलों को बढ़ाने पर भी बल दिया गया।
- दोनों पक्षों ने साझा समुद्री क्षेत्र में समकालीन समुद्री चुनौतियों का समाधान करने, सुरक्षा, संरक्षण और पर्यावरणीय संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए मिलकर कार्य करने की प्रतिबद्धता दोहराई।

भारतीय तटरक्षक बल (ICG)

- ICG भारत की समुद्री कानून प्रवर्तन और खोज एवं बचाव एजेंसी है, जिसका अधिकार क्षेत्र भारत के प्रादेशिक जल, सन्निहित क्षेत्र तथा विशेष आर्थिक क्षेत्र तक फैला है।
- 1977 में संसद द्वारा पारित तटरक्षक अधिनियम, 1978 के अंतर्गत स्थापित।
- **मूल एजेंसी:** रक्षा मंत्रालय।
- **मुख्यालय:** नई दिल्ली।
- **प्रमुख:** महानिदेशक भारतीय तटरक्षक बल (DGICG)।

भारत का समुद्री क्षेत्र

- भारत का समुद्री क्षेत्र उसके चारों ओर के समुद्रों और महासागरों में उसकी अधिकार क्षेत्र की सीमाओं को दर्शाता है।
- भारत की समुद्री तटरेखा 7,517 किमी है, जिसमें द्वीप क्षेत्र भी शामिल हैं।
- **प्रादेशिक जल (12 नॉटिकल मील):** इस क्षेत्र में भारत पूर्ण संप्रभुता का प्रयोग करता है, और इसमें देश के तटीय क्षेत्र और बंदरगाह शामिल हैं।
- **सन्निहित क्षेत्र (24 नॉटिकल मील):** इस क्षेत्र में भारत सीमा शुल्क, वित्तीय, आव्रजन या स्वच्छता कानूनों के उल्लंघन को रोकने या दंडित करने के लिए कार्रवाई कर सकता है।
- **विशेष आर्थिक क्षेत्र (EEZ):** यह क्षेत्र आधार रेखा से 200 नॉटिकल मील तक फैला होता है।
 - ▲ इस क्षेत्र में भारत को प्राकृतिक संसाधनों जैसे मत्स्य पालन और हाइड्रोकार्बन के अन्वेषण, दोहन, संरक्षण और प्रबंधन के विशेष अधिकार प्राप्त हैं।



समुद्री सुरक्षा

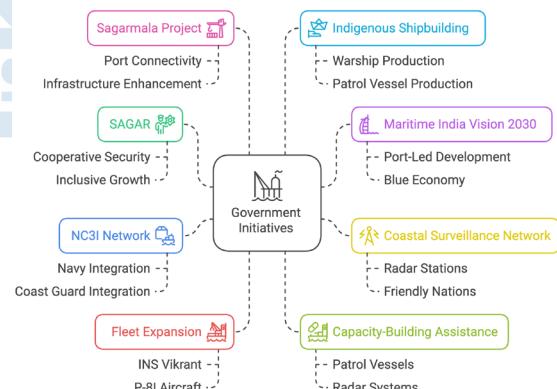
- यह राष्ट्र की संप्रभुता की रक्षा के लिए समुद्रों और महासागरों से उत्पन्न खतरों से सुरक्षा सुनिश्चित करने से संबंधित है।
 - खतरों में तटीय क्षेत्रों की रक्षा, समुद्री संसाधनों जैसे मछली, अपतटीय तेल और गैस कुएं, बंदरगाह सुविधाओं की सुरक्षा शामिल है।
 - यह हमारे जहाजों की आवाजाही की स्वतंत्रता बनाए रखने और व्यापार की सुविधा एवं सुरक्षा सुनिश्चित करने का भी कार्य करता है।
- समुद्री सुरक्षा के तत्व निम्नलिखित हैं:
 - अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा
 - संचार के समुद्री मार्गों की सुरक्षा
 - संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता और राजनीतिक स्वतंत्रता
 - समुद्री अपराधों से सुरक्षा
 - समुद्री संसाधनों तक पहुंच और उनकी सुरक्षा
 - नाविकों और मछुआरों की सुरक्षा
 - पर्यावरण संरक्षण

हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में समुद्री सुरक्षा को सुदृढ़ करने की आवश्यकता

- व्यापार और ऊर्जा जीवन रेखाएं: विश्व के समुद्री तेल व्यापार का 80% से अधिक हिस्सा हिंद महासागर के चोक पॉइंट्स से होकर गुजरता है—40% होरमुज़ जलडमरुमध्य, 35% मलक्का जलडमरुमध्य और 8% बाब अल-मंडब जलडमरुमध्य से।

- यहां कोई भी व्यवधान भारत की अर्थव्यवस्था को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है।
- भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा:** प्रमुख शक्तियों की गतिविधियां (विशेष रूप से चीन की बढ़ती उपस्थिति और बुनियादी ढांचा निवेश) रणनीतिक संतुलन को बदल रही हैं।
- विखंडित समुद्री शासन:** कई तटीय देशों के पास निगरानी, कानून प्रवर्तन और मानवीय एवं आपदा प्रतिक्रिया (HADR) की क्षमता की कमी है।
- विविध विषम खतरे:** अवैध, अनियमित और बिना रिपोर्ट के मत्स्य पालन, तस्करी, समुद्री डैकेटी की पुनरावृत्ति एवं वाणिज्यिक जहाजों पर हमले सुरक्षा को जटिल बनाते हैं।
- ब्लू इकोनॉमी की संभावनाएं:** IOR में मत्स्य पालन, समुद्री खनिज, नवीकरणीय ऊर्जा और पर्यटन में अवसर हैं—जिसके लिए सुरक्षित समुद्रों की आवश्यकता है ताकि सतत दोहन सुनिश्चित किया जा सके।

Government Initiatives for Maritime Security



निष्कर्ष

- भारत की समुद्री सुरक्षा पहल सेन्य क्षमता, बुनियादी ढांचा तत्परता, क्षेत्रीय साझेदारी और कानूनी-संस्थागत ढांचे का मिश्रण दर्शाती है।
- जैसे-जैसे समुद्री खतरे विकसित हो रहे हैं, भारत का दृष्टिकोण—SAGAR में निहित—समुद्री मार्गों की सुरक्षा, तटीय समुदायों की रक्षा और IOR में नियम-आधारित व्यवस्था बनाए रखने पर केंद्रित है।

Source: PIB

भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा ऑटोमोबाइल बाजार

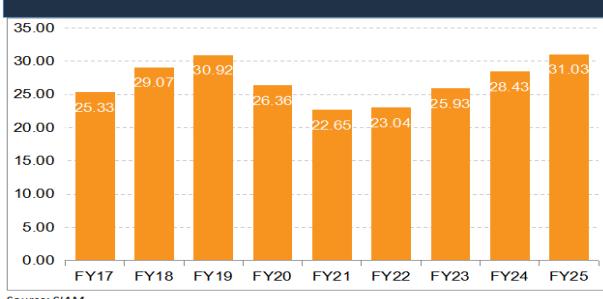
संदर्भ

- सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री ने घोषणा की है कि भारत वैश्विक स्तर पर तीसरा सबसे बड़ा ऑटोमोबाइल उद्योग बनकर उभरा है, जिसका बाजार आकार लगभग ₹22 लाख करोड़ है।

ऑटोमोबाइल उद्योग के बारे में

- वैश्विक परिदृश्य:** संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व का सबसे बड़ा ऑटोमोबाइल उद्योग है, जिसका मूल्य ₹78 लाख करोड़ है।
 - चीन दूसरे स्थान पर है, जिसका उद्योग आकार ₹49 लाख करोड़ है।
- भारतीय परिदृश्य:** भारत का ऑटोमोबाइल उद्योग देश के विनिर्माण और आर्थिक विकास का एक प्रमुख स्तंभ है, जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में लगभग 7.1% और विनिर्माण GDP में 49% का योगदान देता है।
 - घरेलू बाजार में दोपहिया और यात्री वाहन प्रमुख हैं।
 - वित्त वर्ष 2024-25 में दोपहिया वाहनों की बाजार हिस्सेदारी 76.57% रही, जबकि यात्री कारों की हिस्सेदारी 16.80% रही।

Number of Automobiles Produced in India (in million)



Source: SIAM



विकास को गति देने वाली सरकारी पहलें

- उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (PLI) योजना – ऑटो और ACC बैटरियों के लिए:** ₹44,038 करोड़ के कुल आवंटन के साथ यह पहल उन्नत ऑटोमोटिव तकनीकों जैसे इलेक्ट्रिक वाहन, हाइड्रोजन ईंधन सेल वाहन और उन्नत बैटरी भंडारण समाधान के घरेलू निर्माण को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखती है।
- FAME-II योजना:** यह योजना इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड वाहनों तथा चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए सब्सिडी प्रदान करती है, जिससे पर्यावरण अनुकूल वाहनों को अपनाने में सहायता मिलती है और स्वच्छ परिवहन को बढ़ावा मिलता है।
- वाहन स्कैप नीति:** 15 वर्ष से अधिक पुराने वाहनों को चरणबद्ध तरीके से हटाने का लक्ष्य, जिससे उत्सर्जन में कटौती और प्रतिस्थापन मांग को प्रोत्साहन मिले।
- मेक इन इंडिया और एफडीआई नीति:** विशेष रूप से ऑटो क्षेत्र में 100% एफडीआई की अनुमति ने वैश्विक और घरेलू निवेशकों को आकर्षित किया है, जिससे विनिर्माण एवं रोजगार को बढ़ावा मिला है।

क्या है चुनौतियाँ?

- उच्च मूल्य वाले घटकों जैसे सेमीकंडक्टर्स और EV बैटरियों के लिए भारी आयात निर्भरता।
- वैश्विक ऑटो घटक व्यापार में केवल लगभग 3% की हिस्सेदारी, उच्च-सटीकता वाले क्षेत्रों में कम पैठ।
- इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग और हाइड्रोजन ईंधन भरने के लिए अपर्याप्त बुनियादी ढांचा।
- पर्यावरणीय चुनौतियाँ:** वाहनों की संख्या में वृद्धि के कारण कार्बन उत्सर्जन और पर्यावरणीय चिंताएं बढ़ रही हैं।

आगे की राह

- उच्च तकनीक ऑटोमोटिव घटकों में स्थानीयकरण बढ़ाकर आयात निर्भरता को कम करना।

- EV चार्जिंग नेटवर्क और हाइड्रोजन इंधन अवसंरचना में निवेश का विस्तार करना।
- अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देना और उन्नत विनिर्माण क्षमताओं के लिए कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना।
- पुनर्चक्रण, उत्सर्जन नियंत्रण उपायों और हरित गतिशीलता समाधानों को बढ़ावा देना ताकि सतत विकास सुनिश्चित हो सके।

Source: AIR

ऐतिहासिक अध्ययन से डेंगू से बचाव के बारे में नई जानकारी प्राप्त

संदर्भ

- एक नवीन अध्ययन ने डेंगू वायरस (DENV) के विरुद्ध सुदृढ़ प्रतिरक्षा विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की है, जो सामान्यतः काफी जटिल होती है।

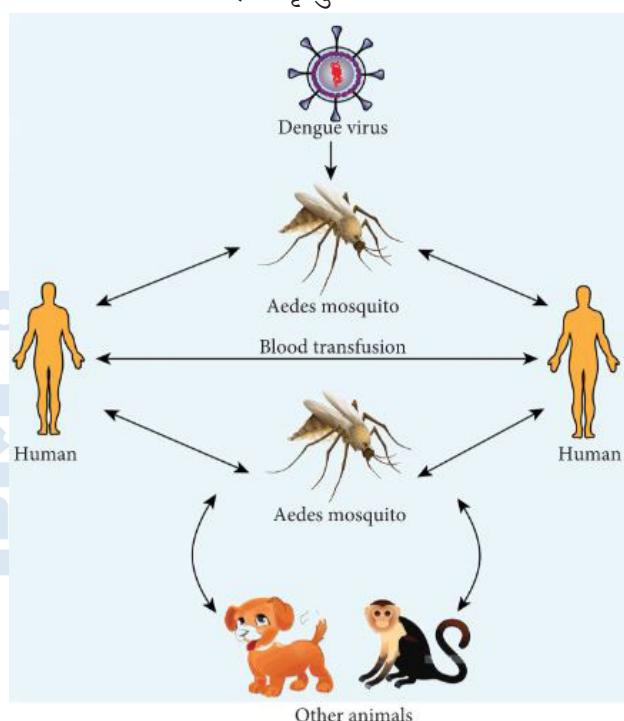
परिचय

- अमेरिका और फिलीपींस के शोधकर्ताओं ने कुछ विशिष्ट एंटीबॉडीज की पहचान की है, जिन्हें एंवेलप डाइमर एपिटोप (EDE)-जैसी एंटीबॉडीज कहा जाता है।
- ये प्राकृतिक संक्रमण या टीकाकरण के बाद व्यापक, क्रॉस-सेरोटाइप प्रतिरक्षा विकसित करने की कुंजी मानी जा रही हैं।
- यह खोज डेंगू प्रतिरक्षा को समझने में एक महत्वपूर्ण प्रगति है और इससे अधिक प्रभावी उपचार विकसित किए जा सकते हैं।

डेंगू के बारे में

- डेंगू एक मच्छर जनित वायरल रोग है, जो डेंगू वायरस (DENV) के कारण होता है।
- इसके चार सेरोटाइप होते हैं: DENV-1, DENV-2, DENV-3 और DENV-4। यह मुख्य रूप से एडीज एजिप्टी मच्छर द्वारा फैलता है।

- प्रसार:** यह वायरस व्यक्ति से व्यक्ति सीधे नहीं फैलता।
 - मच्छर पहले संक्रमित व्यक्ति को काटता है और फिर किसी अन्य व्यक्ति को काटने पर वायरस को स्थानांतरित करता है।
- लक्षण:** बुखार, तेज सिरदर्द, मांसपेशियों और जोड़ों में दर्द, मतली एवं उल्टी, आंखों के पीछे दर्द, और चकते।
 - गंभीर मामलों में यह संक्रमण आंतरिक रक्तस्राव का कारण बन सकता है और यदि सही तरीके से प्रबंधन न किया जाए तो मृत्यु भी हो सकती है।



- उपचार:** डेंगू का कोई विशिष्ट उपचार नहीं है। रोग की प्रगति की शीघ्र पहचान और उचित चिकित्सा देखभाल से गंभीर डेंगू की मृत्यु दर 1% से भी कम हो जाती है।
- टीका:** Dengvaxia (CYD-TDV) – कुछ देशों में स्वीकृत, 9–16 वर्ष की आयु के उन व्यक्तियों के लिए अनुशंसित जिनका डेंगू संक्रमण का इतिहास रहा हो।

डेंगू और टीकाकरण की चुनौतियाँ

- वैश्विक भार:** यह सबसे सामान्य वेक्टर-जनित वायरल रोग है; विश्व की आधी जनसंख्या जोखिम में है, विशेष रूप से दक्षिण-पूर्व एशिया, अफ्रीका और अमेरिका में।

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, डेंगू बुखार वैश्विक स्वास्थ्य के लिए शीर्ष 10 खतरों में से एक है।
- भारत में डेंगू: भारत वैश्विक डेंगू मामलों का बड़ा हिस्सा रखता है; 2024 में 2.3 लाख मामले और 297 मृत्युएँ दर्ज की गईं।
- टीका चुनौती: पहली बार संक्रमण के बाद विकसित प्राथमिक प्रतिरक्षा, दूसरे सेरोटाइप से दोबारा संक्रमण पर बीमारी को और गंभीर बना सकती है।
 - गंभीर डेंगू (जिसमें अस्पताल में भर्ती की आवश्यकता होती है) सामान्यतः दूसरी बार संक्रमण के बाद होता है। सच्ची सुरक्षा (द्वितीयक प्रतिरक्षा) केवल तब विकसित होती है जब ≥ 2 सेरोटाइप से संक्रमण हो चुका हो।

अध्ययन का महत्व

- EDE-जैसी एंटीबॉडीज सुरक्षात्मक प्रतिरक्षा के लिए बायोमार्कर हो सकती हैं।
- भविष्य के टीके विशेष रूप से उच्च स्तर की EDE-जैसी एंटीबॉडी उत्पन्न करने का लक्ष्य रख सकते हैं।
- इससे टीके की सुरक्षा और क्रॉस-सेरोटाइप सुरक्षा में सुधार हो सकता है।

Source: TH

संक्षिप्त समाचार

भारत द्वारा फिजी को 5 टन लोबिया के बीज भेजे

समाचार में

- भारत ने अपनी “एक्ट इस्ट नीति” के अंतर्गत कृषि सहायता के रूप में फिजी को 5 मीट्रिक टन काली आंख वाली लोबिया (black-eyed cowpea) के बीज मानवीय सहायता के रूप में भेजे।

फिजी

- यह दक्षिण प्रशांत महासागर में स्थित एक द्वीप देश है, जो कोरो सागर के चारों ओर फैला हुआ है, ऑकलैंड (न्यूजीलैंड) से लगभग 2,100 किमी उत्तर में।



- यह लगभग 330 द्वीपों और 500 छोटे टापुओं व प्रवाल भित्तियों से मिलकर बना है।
- राजधानी: सुवा
- सबसे बड़े द्वीप: विटी लेवु और वानुआ लेवु – ये ज्वालामुखीय हैं, जबकि छोटे द्वीप प्रवाल-आधारित हैं।
- सबसे ऊँचा स्थान: माउंट टोमानीवी (1,324 मीटर)

Source: AIR

पेरिटो मोरेनो ग्लेशियर

समाचार में

- हाल ही में वैज्ञानिकों ने तापमान वृद्धि के कारण अर्जेंटीना के पेरिटो मोरेनो ग्लेशियर में तीव्रता से पिघलने की चेतावनी दी है।

पेरिटो मोरेनो ग्लेशियर ('श्वेत विशालकाय')

- यह अर्जेंटीना के सांता क्रूज प्रांत में एल कालाफाते शहर के पास स्थित है और लॉस ग्लेशियर्स नेशनल पार्क के अंतर्गत आता है, जो यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है।
- यह एंडीज पर्वत शृंखला में स्थित 30 किमी लंबा ग्लेशियर है।
- यह लगभग 18,000 वर्ष पहले अंतिम हिम युग के दौरान बना था। यह एक प्रमुख स्वच्छ जल का स्रोत और पर्यटन स्थल है, जो 1917 से नाटकीय हिमखंड के विखंडित होने की घटनाओं के लिए प्रसिद्ध है।

Source: IE

जम्मू-कश्मीर विधानसभा के लिए नामांकन निर्वाचित सरकार के अधिकार क्षेत्र से बाहर संदर्भ

- केंद्रीय गृह मंत्रालय ने जम्मू और कश्मीर उच्च न्यायालय को सूचित किया है कि केंद्र शासित प्रदेश के उपराज्यपाल जम्मू-कश्मीर विधानसभा में राज्य सरकार की ‘सहायता और सलाह’ के बिना पाँच सदस्यों को नामित कर सकते हैं।
 - आलोचकों का कहना है कि इससे भविष्य की निर्वाचित J&K सरकार की भूमिका कम हो जाती है और केंद्र को अधिक नियंत्रण मिलता है।

परिचय

- जम्मू और कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम, 2019 ने पूर्ववर्ती राज्य को दो केंद्र शासित प्रदेशों (J&K और लद्दाख) में विभाजित किया और J&K के लिए विधायी ढांचा निर्धारित किया।
- 2023 के संशोधन ने अधिनियम में धारा 15, 15A, 15B जोड़ीं, जिससे उपराज्यपाल को नामांकन का अधिकार मिला:
 - 2 कश्मीरी प्रवासी (जिसमें 1 महिला शामिल हो)
 - 1 सदस्य पाकिस्तान-अधिकृत जम्मू-कश्मीर (PoJK) समुदाय से
 - 2 महिलाएं, यदि पर्याप्त प्रतिनिधित्व न हो।
- इस संशोधन से विधानसभा की कुल सीटें 114 से बढ़कर 119 हो गईं (PoJK क्षेत्रों के लिए आरक्षित 24 सीटों को छोड़कर)।

Source: TH

उल्ची फ्रीडमशील्ड

संदर्भ

- दक्षिण कोरिया और संयुक्त राज्य अमेरिका उल्ची फ्रीडम शील्ड के अंतर्गत प्रमुख संयुक्त सैन्य अभ्यास करेंगे।

परिचय

- यह एक वार्षिक अभ्यास है जिसका उद्देश्य कोरियाई प्रायद्वीप और व्यापक क्षेत्र की रक्षा के लिए सभी क्षेत्रों में तत्परता एवं सहयोग को सुदृढ़ करना है।

- ये अभ्यास 1960 के दशक (ताएंगुक अभ्यास) से शुरू हुए हैं और उल्ची-फोकस लैंस सहित विभिन्न पुनरावृत्तियों के माध्यम से विकसित हुए हैं तथा 2008 में इनका नाम परिवर्तित कर उल्ची-फ्रीडम गार्जियन कर दिया गया।
- इस वर्ष का अभ्यास उत्तर कोरिया के बढ़ते परमाणु खतरों के प्रति उन्नत प्रतिक्रियाओं के साथ-साथ आधुनिक युद्धों में उपयोग की जाने वाली अत्याधुनिक तकनीकों का परीक्षण करेगा।

Source: TH

एटालिन जलविद्युत परियोजना

संदर्भ

- केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय के एक विशेषज्ञ पैनल ने 3,087 मेगावाट की एटालिन जलविद्युत परियोजना के लिए पर्यावरणीय मंजूरी की सिफारिश की है।

परिचय

- एटालिन, द्री और तांगून नदियों पर बनी एक विशाल नदी-प्रवाह परियोजना है।
- यह परियोजना अरुणाचल प्रदेश की दिबांग घाटी में स्थित है।
- द्री नदी, मथुन से मिलने के पश्चात, नीचे की ओर प्रवाहित है और एटालिन गाँव के पास तांगून से मिल जाती है, जहाँ इसे दिबांग नदी कहा जाता है।
- इस परियोजना में दो अलग-अलग जलमार्ग प्रणालियों के माध्यम से जल को मोड़ने के लिए कंक्रीट के गुरुत्वाकर्षण बांधों का निर्माण शामिल है।
- इस परियोजना का विकास सतलुज जल विद्युत निगम (एसजेवीएन) लिमिटेड द्वारा किया जाएगा।

Source: IE

ऑर्बिटिंग कार्बन ऑब्जर्वेटरीज (OCO) कार्यक्रम

समाचार में

- ट्रूप प्रशासन ने कथित तौर पर NASA से ऑर्बिटिंग कार्बन ऑब्जर्वेटरीज (OCO) को बंद करने का अनुरोध किया।

ऑर्बिटिंग कार्बन ऑब्जर्वेटरी (OCO)

- OCO एक श्रृंखला है जो पृथ्वी के दूरस्थ संवेदन उपग्रहों पर आधारित है, जिन्हें विशेष रूप से वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) का अवलोकन करने के लिए डिज़ाइन किया गया है ताकि जलवायु परिवर्तन की विशेषताओं को बेहतर ढंग से समझा जा सके।
- समयरेखा:**
 - प्रथम मिशन OCO (2009) लॉन्च वाहन की खराबी के कारण विफल रहा।
 - इसके स्थान पर OCO-2 को 2014 में लॉन्च किया गया, जो CO_2 स्तरों को मापता है और फसलों में प्रकाश संश्लेषण को ट्रैक करता है।
 - 2019 में OCO-3 को अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) पर भेजा गया, जिससे OCO-2 की नियत दैनिक अनुसूची की तुलना में विविध अवलोकन समय संभव हुआ, और CO_2 स्रोतों, अवशोषण क्षेत्रों और फसल स्वास्थ्य पर डेटा संग्रह बेहतर हुआ।
- प्रासंगिकता:** OCO मिशन वैश्विक स्तर पर वायुमंडलीय CO_2 की निगरानी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, जो वैज्ञानिकों को जलवायु परिवर्तन को अधिक सटीक रूप से समझने में सहायता करते हैं।
 - इनसे अप्रत्याशित जानकारियाँ मिलीं, जैसे कि बोरियल वनों की CO_2 अवशोषण में प्रमुख भूमिका, और यह भी कि वन कभी-कभी कार्बन उत्सर्जक बन सकते हैं।
 - OCO डेटा फसल निगरानी, सूखा ट्रैकिंग, और उपज पूर्वानुमान में भी सहायक है, जिससे किसानों और नीति निर्माताओं को लाभ होता है।

Source :IE

ऊदबिलाव (Otters)

संदर्भ

- दिल्ली के राष्ट्रीय प्राणी उद्यान में ऊदबिलाव 20 वर्षों से अधिक समय बाद फिर से लौटने वाले हैं। चिड़ियाघर में अंतिम ऊदबिलाव की मृत्यु 2004 में हुई थी।

उदबिलाव के बारे में

- उदबिलाव स्तनधारी वर्ग के मस्टेलिडी (Mustelidae) परिवार के सदस्य हैं। ये मुख्यतः भोर और संध्या के समय सक्रिय रहते हैं, जिसे क्रेपस्कुलर व्यवहार कहा जाता है।
- वितरण:** उदबिलाव विश्व भर में पाए जाते हैं, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, मेडागास्कर और अन्य महासागरीय द्वीपों को छोड़कर।
- भारत में विश्वभर में पाई जाने वाली 13 प्रजातियों में से 3 प्रजातियाँ पाई जाती हैं:
 - यूरेशियन ऊदबिलाव (*Lutra lutra*)
 - स्मूद-कोटेड ऊदबिलाव (*Lutra perspicillata*)
 - स्मॉल-क्लॉड ऊदबिलाव (*Aonyx cinereus*)
- आवास:** नदियाँ, झीलें, तटीय क्षेत्र और केल्प वन।
- आहार:** मांसाहारी—मछलियाँ, क्रस्टेशियन्स, मोलस्क और कभी-कभी छोटे स्तनधारी या पक्षी खाते हैं।
 - सी ऊदबिलाव (Sea otters) कुछ गैर-मानव प्रजातियों में से हैं जो औजारों का उपयोग करते हैं—ये शोलफिश को पत्थरों से तोड़ते हैं।
- खतरे:** आवास की हानि, प्रदूषण, और उनके फर के लिए शिकार।
- IUCN स्थिति:**
 - स्मूद-कोटेड ऊदबिलाव (*Lutrogale perspicillata*): असुरक्षित (Vulnerable)
 - एशियाई स्मॉल-क्लॉड ऊदबिलाव (*Aonyx cinereus*): निकट संकटग्रस्त (Near Threatened)
 - यूरेशियन ऊदबिलाव (*Lutra lutra*): निकट संकटग्रस्त (Near Threatened)

Source: IE

पठानीर

संदर्भ

- तमिलनाडु के थूथुकुडी ज़िले में, ताड़ के पेड़ पर चढ़ने वाले लोग पथनीर की कटाई करते हैं।

पथनीर के बारे में

- पथनीर, जिसे ताड़ का रस भी कहा जाता है, ताड़ के पेड़ों के रस से बना एक पारंपरिक, ताजा और मीठा पेय है।
 - रस को करुपट्टी (ताड़ का गुड़) और पनंगकरकांडु (ताड़ की कैंडी) में संसाधित किया जाता है।
- यह दक्षिण भारत, श्रीलंका और विश्व के अन्य हिस्सों में एक लोकप्रिय पेय है।

- निष्कर्षण:** पथनीर सामान्यतः नारियल या ताड़ के पेड़ों के बंद डंठलों (फूलों के डंठल) से निकाला जाता है।
- रस को मृदा के बर्तनों में एकत्रित किया जाता है, प्रायः किण्वन को रोकने के लिए इसमें थोड़ा सा चूना या कैलिशयम कार्बोनेट मिलाया जाता है।

Source: TH

